अध्यापकों में कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन (सागर संभाग, मध्य प्रदेश, भारत, के संदर्भ में)

मोहसिन उद्दीन एवं वकार अहमद
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, ईशिक विश्वविद्यालय, इरबिल, कुद्रिस्तान, ईराक
waqarahmad00115@gmail.com

प्राप्त तिथि–28.10.2018, स्वीकृत तिथि–14.11.2018

सार– राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा एक शक्तिशाली उपकरण है। शिक्षा मानव की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध आलेख अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करता है। आज के परिप्रेक्ष्य में यह शोध आलेख अध्यापकों की कार्य संतुष्टि और बेहतर शिक्षा व मनोबल का मार्ग प्रशस्त करता है। इसके अतिरिक्त अध्यापकों एवं शिक्षा नीति के लिए भी एक सुझाव के तौर पर विषय वस्तु उपलब्ध कराता है।

बीज शब्द– अध्यापक एवं कार्य संतुष्टि।

A comparative study towards job satisfaction among teachers

Mohsin Uddin and Waqar Ahmad
Assistant Professor, Ishik University, Irbil, Kurdistan, Iraq
waqarahmad00115@gmail.com

Abstract- Education is the need for human being and the powerful tool for development of a country. This study is based on teacher's job satisfaction and better work level towards development in the present scenario and finding of this study is useful for development of educational planning.

Key words- Teacher and job satisfaction.

1. परिचय– राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा एक शक्तिशाली उपकरण के तौर पर उपयोग किया जाता है। शिक्षा मानव की आवश्यकता है, मानव का सम्पूर्ण विकास शिक्षा पर निर्भर है, अध्यापक शिक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है। अध्यापक के ऊपर ही शिक्षा की सफलता निर्भर करती है। अध्यापक ही विद्यार्थियों के मनोविज्ञान, शारीरिक, समाजिक, एवं सांस्कृतिक गुणों का विकास करता है। वर्तमान समय में कार्य संतुष्टि को सर्वोपरि माना गया है। तद्नुसार ही व्यक्ति पूर्ण मनोयोग से कर्तव्य निर्वहन करता है। भारतीय समाज में अध्यापक को गुरू की उपाधि में विभूषित किया गया है। यदि अध्यापक अपने कार्य से संतुष्ट रहेगा तो विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियां बढ़ जायेगी। इस विचार धारा को ध्यान में रखकर वर्तमान अध्ययन किया गया है। जैन एवं गर्ग[1] ने प्रारम्भिक स्तर पर कार्यरत अध्यापकों की कार्य संतुष्टि शैक्षणिक कार्य दर्शन एवं मनोदशा का अध्ययन किया। मध्य प्रदेश के पाँच जनपदों के 100 विद्यालयों में से 400 अध्यापकों, 100 प्रधानाचार्य एवं 100 पर्ववेक्ष को न्यायदर्श में लिए गये। उन्होंने यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि जनपदों की स्थिति के आधार पर अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में सबसे अधिक सार्थक अन्तर पाया गया है। यह अभिमत भी प्राप्त किया कि अध्यापक वर्तमान स्थिति में संतुष्ट नहीं है। समाज में अब अध्यापकों को उचित सम्मान तथा मान्यता नहीं मिल पा रही है। अन्य श्रेणियों के मुकाबले उनकी आय भी अर्पयाप्त है। मौर्य[2] ने अध्ययन में पाया कि माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षक प्रभावशीलता के मध्य अत्यन्त निम्न स्तरीय धनात्मक सहसम्बन्ध है। इसका कारण वर्तमान में विभिन्न दृष्टिकोणों का परिवर्तन होना, वेतन व कार्य दशाओं का होना हो सकता है।[3–6]

2. **अध्ययन का प्रयोजन–** प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित प्रयोजन के लिए किया गया है।

1. प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का स्तर ज्ञात करना।
2. सागर एवं रहली विकास खण्ड के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि के स्तर का आंकलन।

3. **अध्ययन विधि–** प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
4. **जनसंख्या–** प्रस्तुत अध्ययन में मध्य प्रदेश के अर्न्तगत सागर संभाग में स्थित प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

5. **न्यायदर्श**– न्यायदर्श का चयन करने के लिए शोधकर्ताओं ने सागर जिले में स्थित रहली तथा सागर विकास खण्ड की 10 प्राथमिक एवं माध्यमिक शाखाओं का चयन यादयाद निदक विधि द्वारा किया है। इस अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित प्राथमिक एवं माध्यमिक शाखाओं में कार्यरत अध्यापकों को चुना गया है।

6. **शोध उपकरण**– वर्तमान अध्ययन के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। इसमें कुल मिलाकर 30 कथन हैं जिसमें सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही प्रकार के कथन हैं। इसमें अध्यापकों को जो विकल्प सही लगता है उस पर सही (√) का चिन्ह लगाना है। इसमें कोई प्रतिक्रिया सही या गलत नहीं है।

तालिका–1: शाला स्तर पर संतुष्टि

शाला	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रातिंक
माध्यमिक	166.32	24.12	2.13
प्राथमिक	153.21	20.02	

नोट–सार्थक का स्तर 0.01

तालिका–1 के निरीक्षण से ज्ञात होता है कि अध्यापकों की तुलना करने पर क्रातिंक निष्पत्ति 2.13 प्राप्त हुई है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर रखती है। अतः यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर नियुक्त शिक्षक ज्यादा संतुष्ट हैं, क्योंकि उनका वेतन एवं सेवा शर्तें प्राथमिक स्तर के अध्यापकों की तुलना में अच्छी हैं।[7]

तालिका–2: विकास खण्ड स्तर पर कार्य संतुष्टि

विकास खण्ड	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रातिंक निष्पत्ति
रहली	144.53	18.30	4.10
सागर	152.66	19.06	

नोट–सार्थक का स्तर 0.01

तालिका–2 के अध्ययन से पता चलता है कि रहली एवं सागर में कार्यरत अध्यापकों के कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है। रहली के अध्यापकों का मध्यमान 144.53 है। जो कि सागर के कार्यरत अध्यापकों में मध्यमान से कम है। इसका अर्थ है कि रहली विकास खण्ड में कार्यरत शिक्षक अपने जीवन वृत्ति से असंतुष्ट हैं।

7. **निष्कर्ष**– प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि जो अध्यापक सागर विकास खण्ड में कार्यरत हैं वे कार्य संतुष्टि रखते हैं परन्तु जो अध्यापक रहली विकास खण्ड में कार्यरत हैं उनका कार्य संतुष्टि का स्तर कम है। मुख्यालय से दूर कार्य करने वाले अध्यापकों के लंबित आर्थिक प्रकरणों का समाधान किया जाना चाहिए। जो अध्यापक ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत हैं उनकी पदोन्नति तथा ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य करने के लिए प्रोत्साहन की व्यवस्था अपेक्षित है। सभी क्षेत्रों में आवश्यक सुविधाएं व समान कार्य का वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए।

संदर्भ

1. जैन, डी0 एवं गर्ग, ए0(2016) मध्य प्रदेश में प्रारम्भिक स्तर पर कार्यरत अध्यापकों की कार्य संतुष्टि, शैक्षणिक कार्यदशा एवं मनोदशा का विश्लेषणात्मक अध्ययन, परिप्रेक्ष्य, खण्ड–23, अंक–2, मु0पृ0 15–24।
2. मौर्या, पी0(2013) माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन, परिप्रेक्ष्य, खण्ड–20, अंक–3, मु0पृ0 83–96।
3. उद्दीन, मोहसिन(2013) टीचर अवेयरनेस एण्ड एटीट्यूड टुवर्डस् आई0सी0टी0, रिसर्च जनरल ऑफ सोशल साइंस।
4. उद्दीन, मोहसिन(2013) एलीमेन्ट्री एजूकेशनल रूलर सेटिंग, इन्द्रा पब्लिकेशन हाउस, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत।
5. उद्दीन, मोहसिन एवं अन्य(2018) प्रोस्पेक्टिव इन चाइल्डस् डेवेलेपमेन्ट, नीलकमल पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
6. उद्दीन, मोहसिन(2018) मानव समाधन के नए आयाम, इशिक पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।
7. उद्दीन, मोहसिन एवं गौरी, बसंत(2018) जॉब सैटिस्फैक्शन अमंग रूलर डेवेलपमेन्ट प्रोफेशनल अप्रकाशित आलेख, अर्न्तराष्ट्रीय सेमीनार, ए0जी0 विश्वविद्यालय, गुंटूर, आन्ध्र प्रदेश।